जो सभी का
मित्र होता है
वो किसी का भी
मित्र नहीं होता।
– अज्ञात

बेरोजगार प्रवासी कामगारों की बड़ी तादाद

बिल भले कुवैत में आ रहा हो पर समस्या कुवैत तक सीमित नहीं है। सारे खाड़ी देश कोरोना और सस्ते तेल की दोहरी मार झेल रहे हैं और समाधान प्रवासियों की संख्या घटाने में देख रहे हैं। हालांकि यह कोई नई बात नहीं।

राधा जोशी।

कोविड 19 से उपजे हालात के साइड इफेक्ट के तौर पर एक और समस्या देश के सामने आ खड़ी हुई है। कई खाड़ी देशों से बेरोजगार होकर प्रवासी कामगारों की बड़ी तादाद भारत लौट चुकी है लेकिन अब उनकी वापसी की संभावना पर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। कुवैत की नैशनल असेंबली में एक बिल लाया जा रहा है जिसका मकसद देश में प्रवासियों की संख्या में जबर्दस्त कमी लाना है।

अभी कुवैत की कुल आबादी का 70 फीसदी हिस्सा प्रवासियों का है जिसे कम करके 30 फीसदी तक लाने का इरादा इस बिल में जताया गया है। वहां प्रवासी मजदूरों में बड़ी संख्या भारतीयों की ही है। माना जा रहा है कि यह बिल इसी रूप में अमल में आ गया तो करीब 8 लाख प्रवासी भारतीयों का कुवैत से साथ छूट जाएगा। ध्यान रहे, 2018 में सिर्फ कुवैत से ही करीब 4.8 अरब डॉलर भारत भेजे गए थे। यूं भी प्रवासियों की नियमित कमाई प्राप्त करने में भारत दुनिया में अव्वल है।

2018 में यह राशि देश के जीडीपी का 2.9 फीसदी आंकी गई थी। अभी कोरोना और तेल कीमतों में गिरावट के मिले–जुले प्रभाव का नतीजा यह देखने को मिल रहा है कि प्रवासी भारतीयों पर चौतरफा संकट आ पड़ा है। बिल भले कुवैत में आ रहा हो पर समस्या कुवैत तक सीमित नहीं है। सारे खाड़ी देश कोरोना और सस्ते तेल की दोहरी मार झेल रहे हैं और समाधान प्रवासियों की संख्या घटाने में देख रहे हैं। हालांकि यह कोई नई बात नहीं। जब भी इन देशों पर कोई आफत आती है, सबसे पहले उनकी नजर बाहर से आकर काम कर रहे लोगों पर ही जाती है। यह अलग बात है कि इससे उनकी बीमारी का कोई स्थायी इलाज नहीं निकलता।

सऊदी अरब सबसे पहले ऐसे उपाय घोषित करने वाला देश रहा है। 1975 में वहां के कुल कामगारों में 75 फीसदी मूल निवासी और 25 फीसदी प्रवासी थे। पर 40 साल बाद 2015 में प्रवासी कामगारों का प्रतिशत घटने के बजाय बढ़कर 57 प्रतिशत हो गया। ऐसा सिर्फ सऊदी अरब में नहीं, तमाम खाड़ी देशों में हुआ है। कतर और संयुक्त अरब अमीरात में 95 फीसदी, कुवैत में 86 फीसदी, ओमान में 81 फीसदी और बहरीन में 73 फीसदी कामगार दूसरे मुल्कों के हैं। इसके पीछे कम मजदूरी ही नहीं काम की क्वॉलिटी की भी बड़ी भूमिका है। जो काम प्रवासी करते हैं, उन्हें करने में इन देशों के मूल निवासी अपनी हेठी समझते हैं।

संभवतः इन्हीं वजहों से कई विशेषज्ञों का मानना है कि प्रवासी विरोधी राजनीतिक–प्रशासनिक कदमों का कोई खास प्रभाव लंबे समय के लिए नहीं पड़ेगा। लेकिन कुछ समय के लिए भी अगर प्रवासी भारतीयों को बेरोजगार रहना पड़ा तो भारत को न सिर्फ उनके लिए कुछ इंतजाम करने होंगे, बल्कि विदेशी मुद्रा के मोर्चे पर बड़ा झटका भी झेलना पड़ेगा।

कठिन परिस्थितियां

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

आप जब जीवन में समस्याओं का सामना करते हैं, तो सबसे पहले उन्हें स्वीकार करें और उसे उस अवसर के रूप में देखें जो आपकी छिपी ताकतों को सामने लाएगा। अगर आप समस्या को स्वीकार लेते हैं तो इसे हल करने की ताकत का भी पता आप लगा लेंगे। तैयारी बिल्कुल वैसे ही करें जैसे आप क्रिकेट मैच में किसी विरोधि टीम का सामना करने के लिए करते हैं। खुद को सबसे पहले उन समस्याओं को स्वीकार करने के लिए तैयार करें जो आपके नियंत्रण में नहीं है। ऐसी परिस्थितियों को स्वीकार करके, आप खुद को इसे आत्मसमर्पित नहीं कर रहे हैं बल्कि इससे निपटने के लिए रास्ते का निर्माण कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, जब किसी व्यक्ति की दृष्टि कम हो जाती है और उसे लगता है कि वो जल्द ही अंधा हो जायेगा तो यह खबर उसे दो तरीकों से प्रभावित करती है।

संपादकीय

'गाओकाओ' का उदाहरण

चीन में प्री–यूनिवर्सिटी प्रवेश परीक्षा 'गाओकाओ' के नाम से होती है। अभी 7 और 8 जुलाई को करीब एक करोड़, सात लाख विद्यार्थियों ने यह परीक्षा दी है। इस परीक्षा के लिए छात्रों को दस घंटे दिए जाते हैं। गाओकाओ का मकसद यह होता है कि जो कुछ विद्यार्थी ने तबतक सीखा है, उसके आधार पर वह अपने प्रायोगिक ज्ञान का प्रदर्शन कर सके। चीन की यह परीक्षा दुनिया की सबसे मुश्किल परीक्षा मानी जाती है। हालांकि इसके बहुत से आलोचक भी हैं, लेकिन पढ़ाई का अर्थ अगर ज्ञानार्जन नहीं है तो फिर सब बेकार है। इस लिहाज से हम गाओकाओ का अध्ययन करके इसे स्वदेशी ढांचे में ढाल सकते हैं। ठीक है कि चीन की कई नीतियों की वजह से उसके साथ भारत के संबंध अच्छे नहीं हैं, लेकिन दुश्मन से भी कोई अच्छी बात सीख लेने में कोई हर्ज नहीं होता। भारत सरकार नई शिक्षा नीति पर जोर–शोर से काम कर रही है। त्रुटि रहित शिक्षा प्रणाली में क्या परीक्षा प्रणाली पर भी बहुत गंभीरता से विचार करने की जरूरत नहीं है? 12वीं तक आते–आते छात्र–छात्राएं विवेकशील हो चुके होते हैं। परीक्षा प्रणाली में तयशुदा कोर्स के साथ ही कुछ पेपर ऐसे भी होने चाहिए, जिनसे पता चले कि उनमें सोचने–समझने की, निर्णय लेने की क्षमता कितनी है। इसके बाद उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश की पात्रता जांचने वाली परीक्षा प्रणाली इस तरह की होनी चाहिए, जिसमें छात्र–छात्राओं की बौद्धिक क्षमता को परखा जा सके। अगर हम सिर्फ रटंत विद्या के इर्द–गिर्द घूमेंगे तो बच्चों और मशीनों में क्या अंतर रह जाएगा? हमें तय करना होगा कि हमें सौ प्रतिशत का तात्कालिक सुख चाहिए या जीवन को सार्थक बनाने वाली शिक्षा प्रणाली।

बच्चों को भी यकीनन बहुत अच्छा लग रहा होगा। लेकिन यह सोचकर दिमाग घूम जाता है कि इतने ज्यादा नंबर लाने के बाद इन बच्चों पर भविष्य की अपेक्षाओं का बोझ कितना बढ़ जाता होगा।

ज्यादा नंबर के मायने

रवि पाराशर।।

सीबीएसई के 12वीं के नतीजे पिछले साल के मुकाबले इस बार और अच्छे रहे। खास बात यह रही कि 90 से 95 प्रतिशत अंक पाने वाले छात्र–छात्राओं की संख्या में इजाफा हुआ है। लखनऊ की दिव्यांशी और बुलंदशहर के तुषार ने इतिहास रचते हुए सौ प्रतिशत अंक हासिल किए हैं। सौ में सौ नंबर, यानी प्रश्नपत्रों में पूछे गए सभी सवालों के शत–प्रतिशत उत्तर उन्हें पता थे। जो भी हो, सौ फीसदी और लगभग सौ फीसदी नंबर लाने वाले बच्चों के माता–पिता को बहुत खुशी और गर्व हुआ होगा। बच्चों को भी यकीनन बहुत अच्छा लग रहा होगा। लेकिन यह सोचकर दिमाग घूम जाता है कि इतने ज्यादा नंबर लाने के बाद इन बच्चों पर भविष्य की अपेक्षाओं का बोझ कितना बढ़ जाता होगा।

कोई प्रश्न कर सकता है कि यह क्या बात हुई। बच्चा अगर मेधावी है तो क्या उसके नंबर ज्यादा नहीं आने चाहिए? बिल्कुल आने चाहिए। इसमें किसी को क्या परेशानी है। असल सवाल यह है कि क्या ज्यादा नंबर आने या ज्यादा संख्या में बच्चों के पास होने भर से हम 10वीं और 12वीं की शिक्षा–परीक्षा प्रणाली की पीठ ठोकते रह सकते हैं? यह भी कि भारत के भावी नागरिकों के जिम्मेदार, मजबूत कंधे विकसित

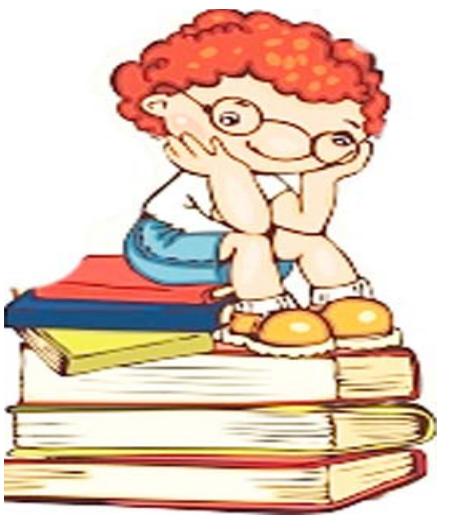

करने में ज्यादा नंबर मिलने की कितनी बड़ी भूमिका हो सकती है? जिन स्कूल–कॉलेजों के विद्यार्थियों का रिजल्ट अच्छा होता है, वे इस बात का प्रचार जोर–शोर से करते हैं। सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए भी यह बड़ी उपलब्धि होती है। लेकिन क्या शिक्षकों का कर्तव्य इतना ही है कि इम्तहान में पूछा जाने वाला कोर्स का एक–एक अक्षर बच्चों को तोते की तरह रटवा दिया जाए?

जिसने जितना रट लिया उतने नंबर पा लिए, या फिर इत्तफाक से जो रटा वही प्रश्नपत्र में पूछ लिया गया और अच्छे नंबर आ गए। क्या छात्र–छात्राओं के बौद्धिक विकास की कसौटी सिर्फ अच्छे नंबर ही हो सकते हैं? तीन–चार दशक पहले कोई बच्चा सौ तो क्या नब्बे प्रतिशत नंबर के भी सपने नहीं देख सकता था। लेकिन फिर सवाल यह है कि क्या तब की शिक्षा और परीक्षा प्रणाली ज्यादा सही थी? अब और तब में फर्क सिर्फ इतना है कि तब परीक्षा में पूछे गए सवालों के जवाबों पर नंबर देने में आज जैसी उदारता नहीं बरती जाती थी। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की संख्या कम होती थी। व्याख्यात्मक जवाबों वाले प्रश्न ज्यादा पूछे जाते थे। यूपी बोर्ड में कोई बच्चा 60 प्रतिशत अंक लाकर फर्स्ट डिवीजन से पास हो जाए तो परिवार क्या, कुनबे–खानदान में खुशी की लहर बहुत दिनों तक दौड़ती रहती थी।

उस समय परिवार के मुखिया की मर्जी से 'मेधावी बच्चों' को बहुधा 'साइंस साइड' लेनी पड़ती थी। विज्ञान के विषय पढ़ना ही मेधावी होने की शर्त हुआ करती थी। जब हिंदी माध्यम से अच्छे नंबरों से 12वीं पास करने वाले मेधावी छात्र बी.एससी. में अंग्रेजी माध्यम की मोटी–मोटी पोथियों से जूझते तो रातों की नींद हराम हो जाती थी। ऐसे ज्यादातर विद्यार्थियों का प्रदर्शन प्रतिशत के मामले में गिर जाता था तो उन्हें नाकारा साबित कर दिया जाता था।

अष्टयोग- 5114

	1		4			2
2	28	4	40		35	4
	2		6	4		
5	28	3	38	6	34	1
		6	3		1	
3	31		24	1	30	6
7			4		3	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5113 का हल

1	2	5	6	4	7	3
2	26	4	40	7	38	4
4	2	6	3	5	1	7
5	34	3	37	6	30	1
6	1	7	4	3	5	2
3	33	2	24	1	27	6
7	6	1	4	2	3	5

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

द्वितीय श्रेणी से पास होने की कुंठा का एहसास

मोहन। 10वीं और 12वीं में प्रथम श्रेणी में पास होने के बाद फिजिक्स, केमिस्ट्री और मैथ्स विषयों से ग्रैजुएशन में द्वितीय श्रेणी से पास होने की कुंठा का एहसास मुझे आज 54 वर्ष का होने के बाद भी कराया जाता है। तब से लेकर अब तक नौकरियों के लिए जितने इंटरव्यू मैंने दिए हैं, एक सवाल जरूर पूछा गया कि ग्रैजुएशन में सेकेंड डिवीजन क्यों आई? अब जरा सोचिए कि जिन बच्चों के सौ प्रतिशत या इसके आसपास नंबर 12वीं में आते हैं, क्या वे इतने ही नंबर उच्च शिक्षा में भी हासिल कर पाएंगे? हो सकता है कुछ यह करिश्मा कर भी ले जाएं, पर ज्यादातर नंबरों के गगनचुंबी शिखरों पर टिके नहीं रह पाएंगे। बहुत से विद्यार्थी 12वीं पास करने के बाद होने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं में पास तक नहीं हो पाते या काफी नीचे की रैंक लाते हैं। उनके बहुत से ऐसे साथी उन परीक्षाओं में बाजी मार ले जाते हैं, जिन्हें 12वीं में कम नंबर मिले थे। ऐसी सूरत में क्यां 95 से 100 फीसदी वाले मेधावियों के हौसले शुरुआत में ही नंबरों के पहाड़ तले नहीं दब जाते?